ओमशान्ति। रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप समझाये रहे×रहे हैं। अर्थात भगवान पढ़ा रहे है रूहानी स्टुडन्ट उन स्कूलों में जो बच्चे पढ़ते हैं वह हैं आसुरी सम्प्रदाय के। आगे तुम आसुरी वा रावण सम्प्रदाय के थे। अभी×× रामराज्य में चलने लिए 5 विकारों रूपी रावण पर जीत पाने पुरुषार्थ कर रहे हो। जो यह नालेज नहीं प्राप्त करते हैं वह आसुरी नालेज ही पढ़ते हैं। उन्हों को समझाना पड़ता है तुम रावण राज्य में हो। खुद ×× समझते नहीं हैं। तुम अपने मित्र सम्बन्धी आद को कहते हो हम बेहद के बाप से पढ़ते हैं तो ऐसे नहीं कि वह निश्चय करते हैं। कितना भी बाप कहे, या भगवान भी कहे तो भी निश्चय नही करते। नये को× को तो यहां आने का हुकुम नही हैं। बिगर चिट्ठी वा बिगर पूछे कोई आ भी नहीं सकते। परन्तु कहां2 कोई आ जाते हैं। यह भी कायदे का उलंघन है। एक एक का पूरा समाचार, नाम आद लिख पूछना होता हैं। उनको भेज देवे। फिर बाबा कहते हैं भल भेजो। अगर आसुरी दुनिया के स्टुडन्ट होंगे तो बाप समझावेंगे वह पढ़ाई तो असुर पढ़ाते हैं। यह ईश्वर पढ़ाते हैं। उस पढ़ाई से पाई पैसे का दर्जा मिलता हैं। भल कोई बहुत बड़ा इम्तहान पास करते हैं फिर भी कहां तक कमाते रहेंगे। विनाश तो सामने खड़ा हैं। नेचरल कैलेमिटीज़ भी आने वाले हैं। यह भी तुम समझते हो। जो नहीं समझते हैं उन्हों को फिर बाहर विजीटिंग रूम में बिठाये बिठाये समझाना होता हैं। यह हैं ईश्वरीय पढ़ाई। इसमें निश्चय बुधि हो विजयन्ती होंगे। अर्थात विश्व पर राज्य करेंगे। रावण सम्प्रदाय वाले तो यह जानते ही नहीं। इसमें बड़ी खबरदारी चाहिए। परमीशन बिगर कोई भी अन्दर आ नहीं सकते। यह कोई घूमने फिरने की तो जगह नहीं हैं। थोड़े ही समय में कायदे बहुत कड़े हो जावेंगे। क्योंकि यह हैं होलीएस्ट आफ द होली। शिव बाबा को इन्द्र×भी कहते हैं ना। यह इन्द्र सभा है। 9रत्न अंगुठी में भी पहनते हैं। उन रत्नों निलम भी होता हैं। पना, माणिक भी होता हैं। यह सब नाम रखे हुये हैं। परियों के भी नाम हैं ना। तुम परियां उड़ने वाले आत्मायें हो। तुम्हारा ही वर्णन हैं। परन्तु आसुरी सम्प्रदाय इन बातों को कुछ भी समझते नहीं हैं। वह हैं आसुरी मिशन। तुम्हारी हैं ईश्वरीय मिशन। दोनों आकर इकट्ठ हुये हैं। तो रत्न जब डालते हैं उन में कोई पुखराज फिरोज भी होते हैं। कोई का दाम हजार रुपया तो कोई का दाम 10-20 रुपया हैं। बच्चों में भी नम्बरवार हैं। कोई तो पढ़ कर मालिक बन जाते हैं। कोई तो पढ़ कर फिर दास-दासियों बन जाते हैं। राजधानी स्थापन होती है ना। तो बाप बैठ पढ़ाते हैं। इन्द्र भी इनको ही कहा जाता हैं। यह है ज्ञान वर्षा। ज्ञान तो सिवाय बाप के कोई दे न सके। तुम्हारी सबजेक्ट यह हैं। निश्चय हो जाये ईश्वर पढ़ाते हैं फिर वह पढ़ाई को छोड़ेंगे। जो होंगे ही पत्थर बुधि उनको कब तीर लगेगा ही नहीं। आकर चलते2 फिर गिर पड़ते हैं। 5 विकार आधा कल्प के शत्रु हैं। देहाभिमान में आ कर थप्पर मार देते हैं। फिर आश्चर्यवत सुनन्ती कथन्ती.... हो जाते। माया बड़ी दुस्तर हैं। एक ही थप्पर से गिरा देती हैं। समझते हैं हम कब नहीं गिरेंगे फिर भी माया थप्पर लगा देती है। यहां स्त्री पुरुष दोनों को पवित्र बनाया जाता है। सो तो ईश्वर के सिवाय कोई बना न सके। यह हैं ईश्वरीय मिशन। बाकी सब हैं आसुरी मिशन। बाप को खेवईया भी कहा जाता हैं। तुम ×× सेना। खेवईया आते हैं सभी नईया को पार लगाने। कहते भी हैं सच्च की नईया झूलेगी परन्तु डूबेगी नहीं। कितने ढेर के ढेर मठ-पंथ हैं। ज्ञान और भक्ति की जेरे लड़ाई होती हैं। कब भक्ति की भी× विजय होंगी। ज्ञान की भी विजय होंगी। भक्ति के तरफ भी देखो कितने बड़े2 योधे हैं। ज्ञान मार्ग के तरफ भी कितने बड़े2 योधे हैं। अर्जुन-भीम.. आद आद नाम दिखाते हैं। यह तो सब कहानियां बैठ बनाई है। गायन तो तुम्हारा ही है। हीरो-हीरोईन का पार्ट तुम्हारा ही हैं। हीरो-हीरोईन का पार्ट तुम्हारा ही अब बज रहा हैं। इस समय ही युध चलती हैं। तुम्हारे में भी बहुत हैं जो इन बातों को बिलकुल ही समझते नहीं। अच्छे2 होंगे उनको ही तीर लगेगा। मित्र थर्ड क्लास तो बैठ भी न सके। दिन प्रति दिन बहुत कड़े कायदे होते जावें पत्थर बुधि जो कुछ भी नहीं समझते उनका तो यहां बैठना भी बेकायदे हैं। यह हॉल बहुत होलीएस्ट आफ

तो ~~क्रेल~~ हैं। पोप को होली कहते हैं। यह तो ~~म~~ हैं होलीएस्ट आफ दी होली। बाप कहते हैं इन सभी का मुझे कल्याण करना है। यह सब विनाश हो जाने वाले हैं। यह भी कोई ~~म~~ थोड़ी ही समझते हैं। भल सुनते हैं परन्तु एक कान से सुन दूसरे कान से निकाल देते हैं। न कुछ धारण कराते ~~म~~ हैं न कुछ धारण करते हैं। ऐसे गुंगे बोरे भी बहुत हैं। यह दुनिया हो बन्दरों की है ना। हियर नो ईविल ... बन्दर का चित्र दिखाते हैं परन्तु यह तो मनुष्य के लिए ही कहा जाता हैं। मनुष्य इस समय बन्दर से भी बदतर हैं। नारद की भी एक कहानी बैठ बनाई हैं। उनको बोलो तुम अपने सिकल तो देखो। 5 विकार तो अन्दर में नहीं हैं। जैसे सा0 होता हैं। जैसे हनुमान का भी सा0 होता हैं ना। ~~हु~~ हनुमान की पुजा करने वाले भी बहुत हैं। हनुमान बन्दर की पुजारी तो वह भी बन्दर आसुरी सम्प्रदाय ठहरे ना। किसको कहो आसुरी सम्प्रदाय तो ~~प्र~~ बिगर पड़े। अब बन्दरों की लड़ाई आद की तो कोई बात ही नहीं हैं। सिलान में जाते हैं वहां बहुत बड़े2 पत्थर ~~म~~ पड़े ~~हैं~~× हैं समुद्र में। कहते हैं बन्दरों ने पुल बांधी। बन्दर सम्प्रदाय भी बातें ऐसी ही करते हैं। बात मत पूछो। बाप कहते हैं कल्प2 यह होता हैं। सतयुग में यह कुछ भी बातें नहीं होंगी। यह पुरानी दुनिया ही खतम हो जावेगी। जो पक्के निश्चय बुधि होंगे वह ही समझते हैं। कल्प पहले भी हमने राज्य किया था। बाप कहते हैं बच्चे अभी दैवी बुधि धारण करो। कोई बेकायदे काम नहीं करो। स्तुति- निंदा सब में धैर्य ~~क्रम~~×धारण करना हैं। क्रोध न होना चाहिए। नहीं तो आदत पड़ जावेगी। तुम असुर से देवता बनते हो तो कितना नशा होना चाहिए। तुम कितने स्टुडन्ट हो। भगवान बाप पढ़ाते हैं। वह डायरेक्शन देते हैं। कई यह भी भूल जाते हैं। क्योंकि साधारण तन हैं ना। शिव बाबा को तो याद ही नहीं करते। इस देह-धारी मनुष्य को ही समझ लेते हैं। बाप ~~म~~ कहते हैं इस देहधारी को देख कर तुम इतना उठ नहीं सकेंगे। आत्मा को देखो। आत्मा यहां भृकुटि में रहती हैं। आत्मा ही सुन कर कान्ध हिलाती हैं। हमेशा आत्मा से बात करो। तुम आत्मा इस शरीर रुपी तख्त पर ~~बैठी हो।~~ तुम तमोप्रधान थे अब सतोप्रधान बनना हैं। अपन को आत्मा ~~प्रश्ने~~×× समझ बाप को याद करने से देह का भान टूट जावेगा। आधा कल्प का देहाभिमान रहा हुआ हैं। इस समय सभी देहाभिमानी हैं। अब बाप कहते हैं देही अभिमानी बनो। आत्मा ही सब कुछ धारण करती हैं। खाती-पीती सब कुछ करती आत्मा ही हैं। बाप को तो अभोक्ता ही कहा जाता हैं। वह हैं निराकार। यह शरीर धारी सब कुछ करते हैं। ~~म~~ वह खाता ~~पीता~~ पीता कुछ भी नहीं, अभोक्ता हैं। तो इसकी फिर वह लोग कापी करते हैं। कितना मनुष्यों को ठगते हैं। तुम्हारी बुधि में अभी सारा ज्ञान हैं। मनुष्यों की बुधि तो बिलकुल ही तमोप्रधान हैं। जनावर से भी बदतर हैं। कल्प पहले जिन्हों ने समझाया था वह ही समझेंगे। बाप कहते हैं मैं ही कल्प2 आकर तुमको पढ़ाता हूं। और साक्षी हो देखता हूं। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार जो कुछ पढ़ा था वही पढ़ेंगे। टाईम लगता हैं। सेठ फकीरों को देवता बनाना यह डिफिकल्ट हैं। कहते हैं ~~कलि~~ कलियुग की आयु 40 हजार वर्ष हैं। तो घोर अंधियारे में है ना। इसको अज्ञान अंधियारा कहा जाता हैं। भक्ति और ज्ञान में रात-दिन का फर्क हैं। ~~k~~ यह भी समझने की बात हैं। बच्चे बड़े खुशी में भरे हुए होने चाहिए। सब कुछ हैं। कोई ~~k~~ तमना नहीं। जानते है कल्प पहले मिशल हमारे सभी कामनाएं पूरी होती हैं। इसलिए पेट भरा रहता हैं। जिनको ज्ञान नहीं हैं उनका थोड़े ही पेट भरता हैं। खुशी जैसी खुराक नहीं होती। जन्म-जन्मा~~न्तर~~राजाई मिलती हैं। दास दासी बनने वालों को इतनी खुशी नहीं रहेंगी। पूरा महावीर बनना हैं। माया हिलाय न सके। बाबा कहते हैं आँखों की ~~प्रवृ~~× बड़ी सम्भाल रखनी हैं। क्रिमनल दृष्टि न जाये स्त्री को देखने से चलायमान हो जाते हैं। अरे तुम तो भाई-बहन हो। कुमा~~र~~कुमा~~रिये~~ कुमारियां हो ना। फिर कर्मेन्द्रियां चंचलता क्यों करती हैं। बड़े2 लखपति करोड़ पतियों को भी माया खलास कर देती। गरीबों को भी माया ~~प्रक्र को~~ एकदम मार देती हैं। 10 वर्ष के अच्छे2 चलने वाले तो भी जैसे मुर्दे बन जाते हैं। फिर कहते ~~ग~~× हैं बाबा हमने धक्का खाया। अरे 10 वर्ष के बाद भी हार खा ली। लो अब तो पताल

में गिर पड़े। ऐसे का तो फिर मुंह देखना भी अच्छा नहीं लगता। अन्दर में समझते हैं इनकी अवस्था कैसी हैं। कोई 2 तो बड़े अच्छे सर्विस करते हैं। तुम कन्याओं ने ही भीष्मपितामह आद को बाण मारी हैं ना। गीता में थोड़ा बहुत हैं। भागवत तो एकदम झूठा कहेंगे। यह तो हैं ही भगवानुवाच। अगर कृष्ण xxभगवान ने गीता सुनाई तो फिर ऐसे क्यों कहते मैं जो हूं जैसा हूं कोई बिरला ही जानते हैं। कृष्ण यहां होता तो पता नहीं क्या कर देते। कृष्ण का शरीर तो होता ही हैं सतयुग x में। यह नहीं xxxxx जानते कि कृष्ण xxके शरीर में मैं प्रवेश करता हूं। आत्मा तो वही हैं। जिस ने जिसने कृष्ण का शरीर धारण कर राज्य लिया। उनके ही बहुत जन्मों के अंत में मैं प्रवेश करता हूं। कृष्ण के आगे तो झट सब भाग जावे। पोप आद आते हैं तो कितनी झुण्ड जाकर इकट्ठी होती हैं। मनुष्य यह थोड़ेxx ही समझते हैं कि xइस समय सभी पतित तमोप्रधान हैं। कहते भी हैं हे पतित पावन आओ। परन्तु समझते नहीं हैं कि हम पतित हैं।

बच्चों को बाप कितना अच्छी रीत समझाते हैं। बाबा की बुधि तो सब सेन्टर के अनन्य बच्चों तरफ चली जाती हैं। जब जास्ती अनन्य बच्चे यहां आते हैं तो फिर यहां देखता हूं। नहीं तो बाहर में बच्चों को याद करना पड़ता हैं। उनके आगे ज्ञान डान्स करता हूं। मैजोरिटी xx ज्ञानी तू आत्मा होती हैं तो मज़ा भी आता हैं। भक्ति मार्ग के कितने ढेर शास्त्र हैं। उन सब में अग्रम-बग्रम हैं। वह तो जन्म जन्मान्तर से भक्ति करते आये। ज्ञान क्या चीज़ होती हैं यह कोई भी समझते नहीं हैं। बाप को ही नहीं जानते हैं। गुरु लोग अप. को कितना अथॉरिटी समझते हैं। पुरुष भी स्त्री का पति गुरु अपन को समझते हैं। जो कुछ हम कहें वह करो। बच्चियों पर कितने अत्याचार होते हैं। कल्प2 सहन करना पड़ता हैं। ज्ञान में आने से फिर भक्ति छूट जाती हैं। घर में समझो मंदिर xx हो स्त्री पुरुष दोनो भक्ति करते हैं। xxx स्त्री को ज्ञान की चटक लग जाती हैं। और भक्ति छोड़ देती हैं तो कितना हंगामा हो जायेगा। विकार में भी न जाये, शास्त्र आद भी न पढ़े। तो झगड़ा हो जायेगा। इसमें विघ्न बहुत पड़ते हैं। और सतयुग आद में जाने लिए पति कब रोकते नहीं हैं। यहां हैं पवित्रता की बात। पुरुष नहीं रह सकते तो जंगल में चले जाते हैं। स्त्रीयां कहां जाये। स्त्रीयों के लिए कहते हैं वह xxx नर्क का द्वार हैं। बाप कहते हैं यह तो स्वर्ग का द्वार हैं। तुम बच्चे अभी स्वर्ग स्थापन करते हो। इन से पहले नर्क के द्वार थी। अभी स्वर्ग की स्थापना होती हैं। सतयुग हैं स्वर्ग का द्वार। कलियुग हैं नर्क का द्वार। यह समझ की बात हैं। तुम बच्चे भी नम्बरवार xx पुरुषार्थ ही जानो हो। भल पवित्र तो रहते हैं बाकी ज्ञान की धारणा नम्बरवार होती हैं। तुम तो निकल आये यहां बैठे।

परंतु अब तो समझाया जाता हैं गृहस्थ xxxx व्यवहार में रहते पवित्र रहना हैं। उन्हों को तो तकलीफ होती हैं। यहां रहने वालों को तो कोई तकलीफ नहीं। तो बाप समझाते हैं कमल फूल समान गृहस्थ व्यवहार में रहते पवित्र रहो। सो भी इस जन्म की बात हैं। गृहस्थ व्यवहार में रहते हुये अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। आत्मा ही सुनती हैं। आत्मा ही यह बनी हैं। आत्मा ही x जन्म जन्मान्तर भिन्न2 चोला पहनती आती हैं। अब हम आत्माओं को वापस जाना हैं। बाप से योग लगाना हैं। मूल बात यह हैं। बाप भी करता हूं x हम आत्माओं से ही बात करता हूं। आत्मा भृकुटी के बीच में रहती हैं। इन x आरगन्स द्वारा ही सुनती हैं। आत्मा इन में न होती तो यह शरीर मुर्दा बन जाता x। बाप कितना वन्डर फुल ज्ञान आकर देते हैं। परमात्मा बाप बिगर तो यह बातें कोई समझा न सके। सन्यासी आद कोई आत्मा को थोड़े ही जानते हैं। न देखते ही हैं। वह तो आत्मा सो परमात्मा xx कह देते हैं। कहां फिर कहते हैं आत्मा में लेप छेप नहीं लगता हैं। शरीर को धोने गंगा में जाते हैं। यह नहीं समझते आत्मा ही पतित बनती हैं। आत्मा ही सब कुछ करती हैं। बाप समझाते रहते हैं यह मत समझो हम फलाना हूं। यह फलाना हैं सब आत्मा हैं। जात पात का कोई भेद नहीं रहना चाहिए। गवर्मेन्ट कोई धर्म को नहीं मानती। परन्तु धर्म तो हैं। लेकिन बाप समझाते हैं अपन को आत्मा समझो। फलाने धर्म का हूं यह भेद नहीं रखना हैं। ओम।